International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फतेहगढ़ साहिब जिला, पंजाब के खमाणों तहसील का पुरातात्विक सर्वेक्षण: एक अध्ययन

अनिल यादव
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
के.एल.पी.कॉलेज (रेवाड़ी), हरियाणा
ईमेल–anilklprewari@gmail.com

डॉ. यशवीर सिंह,इतिहास विभाग
जे.वी.एम.जी.आर.आर. महाविद्यालय, चरखी दादरी

सार :

इतिहास निरन्तरताओं व बदलावों का अध्ययन है। इन निरन्तरताओं व बदलावों के सन्दर्भ में अतीत की महत्वपूर्ण परिघटनाओं का क्रमगत वैज्ञानिक अध्ययन और तथ्य व उनकी व्याख्याएँ आदि महत्वपूर्ण पहलू हैं। इन ऐतिहासिक घटनाक्रमों में पुरातात्विक विवरणों व पुरातत्त्वविदों की भूमिका बढ़ जाती है। इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध–पत्र "फतेहगढ़ साहिब जिला, पंजाब के खमाणों (Khamanon)तहसील का पुरातात्विक अध्ययन" शीर्षक को शोधार्थी द्वारा चुना गया है। इस शोध–पत्र में शोध विषय शीर्षक से सम्बन्धित मुख्य पहलुओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। पंजाब राज्य के विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों के वितरण में इस क्षेत्र के पुरातात्विक, सांस्कृतिकक्रम, ऐतिहासिक पहलू आदि के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई है। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेषण के दौरान एकत्रित सामग्री के आधार पर क्षेत्र को समझकर प्राचीन लोगों का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्दः–*खमनों, फतेहगढ़ साहिब, सर्वेक्षण, हड़प्पा,धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड*

किसी भी क्षेत्र का पुरातत्व उस क्षेत्र के प्रारंभिक इतिहास को जानने का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। वास्तव में पुरातत्व इतिहास को जोड़ने और उस क्षेत्र के इतिहास के विकास की रूपरेखा को तैयार करता है। इसके द्वारा प्राप्त पुरावशेषों का गहन अध्ययन कर इतिहास के पक्षों को एकसुत्र में पिरोकर नये इतिहास का निर्माण किया जाता है जिसके लिए विभिन्न प्रकार की विधियों एवं विज्ञान का प्रयोग किया जाता है। पुरातत्त्व को इतिहास की आधारशिला कही जा सकती। भारत में पुरातत्त्व की विकास यात्रा 19वीं सदी में जन्म लेकर (1861 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की स्थापना) अब तक विभिन्न चुनौतियों व उतार चढ़ावों से युक्त रही है। एच.डी. संकालिया के अनुसार पुरातत्त्व सरकारी नियंत्रण व संरक्षण के दायरे में रहा

है। बहरहाल, 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध व 20वीं सदी के आरम्भिक दशकों तक देश में सांची, सारनाथ, अजंता या हड़प्पा व मोहनजोदड़ों को छोड़कर कोई प्रांतवार या व्यवस्थित क्षेत्रीय सर्वेक्षण कार्य नहीं हुआ। 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में अविभाजित भारत के पश्चिमी क्षेत्र में गहन पुरातात्विक अनुसंधान आरम्भ हुआ, जिसके तहत विभिन्न सभ्यताओं के कई स्थलों की पहचान की गई जिसमें ई.जे.एच, मैके, जॉन मार्शल व आरेल स्टीन[1] आदि के अनुसंधान प्रमुख थे।

परिचय :–

पंजाब के क्षेत्र ने कृषक समुदायों के लिए जीवन की उत्पति और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भौगोलिक रूप से सतलुज और यमुना नदी के बीच दोआब के मैदान में स्थित है, यहाँ पर जंगली पौधों और जानवरों की विभिन्न किस्मों के प्रावधान के अलावा इस क्षेत्र की नदियों ने उच्च गुणवता वाली कृषि भूमि और सिंचाई की सुविधा दोनों प्रदान करके एक महत्त्वपूर्ण भुमिका निभाई।[2] यह क्षेत्र धातुओं, खनिजों, पत्थरों आदि की कई किस्मों के लिए एक महत्त्वपूर्ण संसाधन क्षेत्र भी था तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यापारिक वस्तुओं के सुचारू प्रवाह को आसान बनाने के लिए आवश्यक मार्ग प्रदान किए। इसीलिए समतल और अच्छी कृषि भूमि की उपस्थिति, बारह मासी और मौसमी नदियों, झीलों, जीव–संसाधनों एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों आदि की प्रचुर मात्रा ने इस क्षेत्र में पहले कृषि समुदाय की शुरूआत और विकास के लिए एक प्रयोगात्मक जीवन और अवसरों के लिए उत्कृष्ट मंच प्रदान किया। इसी तरह से फतेहगढ़ साहिब जिले में प्रारंभिक बस्तियों के अनेक अवशेष मिलते है जिनमें कुछ का तो उत्खनन भी किया जा चुका है। अध्ययन क्षेत्र में अनेक सांस्कृतिक परिवर्तन के सबूत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। फतेहगढ़ साहिब जिला 30°68′ उत्तरी अक्षांश एवं 76°41′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। फतेहगढ़ साहिब जिला के उत्तर में लुधियाना और रोपड़, दक्षिण में पटियाला, पूर्व में रोपड़ व पटियाला के कुछ हिस्सों और पश्चिम में लुधियाना और संगरूर के कुछ हिस्सों से घिरा हुआ है और राज्य की राजधानी चण्डीगढ़ से पश्चिम की ओर 50 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। फतेहगढ़ साहिब जिला पटियाला डिविजन में पड़ता है तथा जिले का कुल क्षेत्रफल 1147 वर्ग किलोमीटर है। जिले में चार तहसील फतेहगढ़ साहिब, अमलोह, खमाणों तथा बस्सी पठाना है। जिले में मंडी गोविन्दगढ़ एकमात्र उपतहसील है।[3]

स्थान :–

खमाणों तहसील 30°45′54″ उत्तरी अक्षांश एवं 76°20′47″ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। खमाणों शहर तहसील मुख्यालय है। इस तहसील में कुल 73 गाँव हैं। यह तहसील किसी भी प्रमुख उद्योग से रहित है तथा विशुद्ध रूप से ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। खमाणों तहसील जिला मुख्यालय फतेहगढ़

साहिब से 19 कि0 मी0 उत्तर दिशा की ओर स्थित है तथा राज्य की राजधानी चण्डीगढ़ से 48 कि0 मी0 पूर्व की ओर स्थित है। खमाणों तहसील उत्तर की ओर चमकौर साहिब व दक्षिण की ओर बस्सी पठाना व पूर्व की ओर मोरिंडा तथा पश्चिम की ओर समराला शहरों से घिरा हुआ है। पंजाबी यहाँ की स्थानीय भाषा है साथ ही साथ लोग हिन्दी भी बोलते हैं।[4]

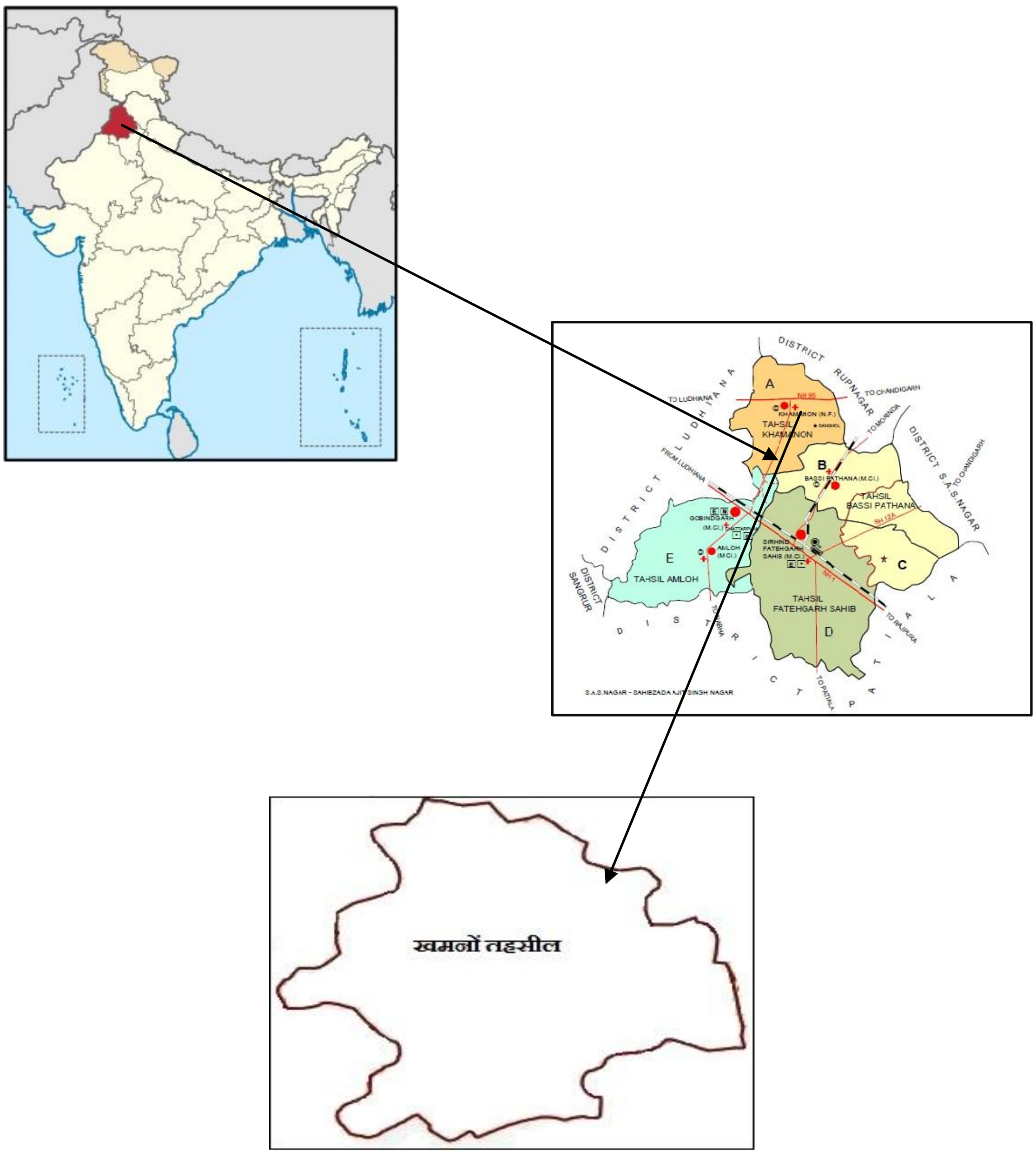

मानचित्र–1 भारत के मानचित्र में खमाणों तहसील की स्थिति

स्थलाकृति :–

सामान्यतः खमाणों तहसील की स्थलाकृति लगभग समतल मैदान के रूप में हैं कहीं–कहीं पर रेत के टीलों के अवशेष भी दिखाई देते हैं। सामान्यतः समतल क्षेत्र की समुद्रतल से ऊँचाई 254 मी0 है। भौगोलिक रूप से इस क्षेत्र का सामान्य ढ़लान दक्षिण–पश्चिम की ओर हैं क्षेत्र की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है जिसमें ग्रीष्मकाल में गर्मी और सर्दियों में ठंड़ होती है। अधिकत्तम वर्षा, वर्षा के मौसम के दौरान होती है।खमाणों क्षेत्रसतलुज और यमुना नदी के जलोढ मैदान का एक हिस्सा है तथा यहाँ पर जलोढ़ की मोटाई अलग–अलग इलाकों में अलग–अलग मिलती है और लगातार दक्षिण की ओर घटती जाती हैं जिसे आमतौर पर बागर और खादर में वर्गीकृत किया जाता है।[5]

पूर्ववर्ती अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण :–

पिछले पाँच दशकों के दौरान पुरातत्ववेताओं द्वारा भारत की विभिन्न आद्यैतिहासिक संस्कृतियों का व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है। कई विद्वानों और पुरातत्त्वविदों ने देश के विभिन्न हिस्सों में खोजपूर्ण सर्वेक्षण और उत्खनन किए हैं जिसके फलस्वरूप खमाणों तहसील में मानव की अनेक प्राचीन बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। जगपति जोशी, आर.एस.बिष्ट, मधुबाला[6], जी.बी. वर्मा, सी. मारगबंधु और जे पी. श्रीवास्तव आदि के द्वारा सर्वेक्षण उत्खनन के द्वारा इस क्षेत्र के पुरातात्विक इतिहास को प्रकाश में लाने का काम किया हैं उपरोक्त विद्वानों द्वारा अध्ययन क्षेत्र के शुरूआती इतिहास से लेकर आधुनिक काल तक के सैकडों स्थलों का दस्तावेजीकरण किया हैं। अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षण के दौरान हमने उपलब्ध सर्वेक्षण सामग्री के साथ बहुत सारी व्यावहारिक समस्याओं का सामना किया है जैसे–अनेक पुरास्थलों के नामों में गलती,अपूर्ण सांस्कृतिक कालक्रम वजियो टैगिंग में गलती आदि।एक पुरातात्विक स्थल के रूप में संघोल का पहला उल्लेख पंडित माधो सरूप वत्स, अधीक्षक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, का 1933 ई. का आधिकारिक पत्र है, जो पटियाला राज्य में संघोल के महाशेय कृष्ण देव शर्मा द्वारा संघोल के खंडहरों में पाया गया एक बड़ा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"बुद्ध सिर" के दान के साथ था। पत्र में कृष्ण देव शर्मा द्वारा एकत्र किए गए कुछ सिक्कों के बारे में पूछताछ का भी जवाब दिया गया है। सिक्के "कुषाण शासक कडफिस प्रथम और कडफिस द्वितीय" के प्रतीत होते हैं।[7] संघोल स्थल की पुरातात्विक क्षमता ने भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया और यह निर्णय लिया कि एक बड़ा उत्खनन का कार्य किया जाए। इसी कारण से संघोल पुरास्थल पर 1968 ई0 से 1990 ई0 तक के समय में अनेक खुदाईयाँ हुई और यहाँ से एक ठोस पुरातात्विक सांस्कृतिक अनुक्रम प्रदान किया। इस पुरास्थल की खुदाई आर.एस.बिष्ट, जी.बी.शर्मा, सी. मारगबंधु और जे पी. श्रीवास्तव द्वारा की गई।[8] संघोल का पुरातात्विक स्थल कई मायनों में असाधारण है विशेष रूप से समृद्ध और विविध सांस्कृतिक भंडार, सिक्कों, मुहरों और मुहरों की अपनी विविध श्रेणी की वजह से यह अन्य समकालीन बस्तियों से संघोल को अलग करता है।[9]

अनुसंधान क्रिया विधि :–

पुरातत्व में अध्ययन के लिए कई तकनीकों को अपनाया जाता है जो कि मानव अतीत के पुनर्निर्माण में मदद करती हैं। अध्ययन क्षेत्र में आद्यैतिहासिक काल से आरंभिक मध्यकाल तक के मानव के जीवन को जानने के स्त्रोत के रूप में पुरातात्विक सर्वेक्षण व उत्खनन रिपोर्टों को आधार बनाया जाएगा। वर्तमान कार्य प्राथमिक रूप से प्रथम सूचना पर आधारित है जो कि तहसील के गाँव–गाँव से एकत्रित की गई है। अध्येयता द्वारा तहसील के गाँवों का व्यापक सर्वेक्षण किया गया तथा पुरास्थलों का सांस्कृतिक कालक्रम का पता लगाया गया। खमाणों तहसील क्षेत्र में पुरास्थलों का सांस्कृतिक जमाव वर्तमान की कठोर खेती के कारण परेशानी की स्थिति में है। फिर भी जाँच के दौरान हमारा मुख्य उद्देश्य मिट्टी के बर्तनों और पुरावशेषों की पहचान करके इस क्षेत्र का सांस्कृतिक परिदृश्य प्रस्तुत करना है। सतह पर मिले मिट्टी के बर्तनों के विवरण के आधार पर सांस्कृतिक कालक्रम का अनुमान लगाया गया हैं वर्तमान अन्वेषण के दौरान कुल 25 पुरास्थलों का दस्तावेजीकरण किया गया है। वर्तमान कार्य मुख्य रूप से प्रासंगित और पहले से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतों से प्राप्त सामग्री को एकत्रित कर उसका अध्ययन विश्लेषण सांस्कृतिक क्रमानुसार अध्ययन विधि से समस्त प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है।

खमाणों तहसील में सांस्कृतिक क्रम व पुरास्थलों की संख्या

क्रम संख्या	**सांस्कृतिक क्रम**	**स्थलों की संख्या**
1	उत्तर हड़प्पन काल	18
2	धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति	08
3	ऐतिहासिक काल	13
4	प्रारंभिक मध्यकाल	23

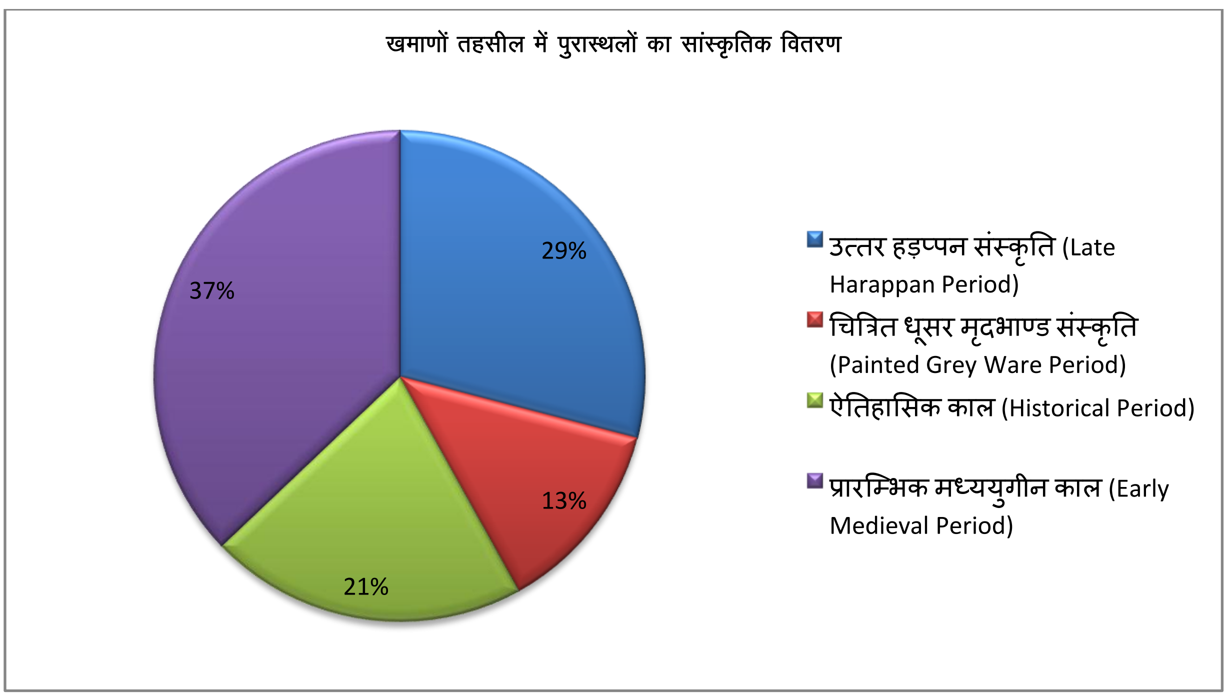

पाई चार्ट : खमाणों तहसील में पुरास्थलों का सांस्कृतिक वितरण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तालिका : खमाणों तहसील में पुरातात्विक स्थल

क्रं.सं.	गाँव का नाम	तहसील का नाम	उत्तरी अक्षांश	पूर्वी देशांतर	संस्कृति
1	बौर	खमाणों	$30^{0}73'03''$	$76^{0}36'92''$	उत्तर विकसित हड़प्पन संस्कृति ,उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
2	कलेवाल	खमाणों	$30^{0}79'64''$	$76^{0}40'06''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल
3	अजनेर	खमाणों	$30^{0}72'86''$	$76^{0}29'98''$	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
4	अमरगढ़	खमाणों	$30^{0}84'40''$	$76^{0}32'81''$	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
5	अमराला	खमाणों	$30^{0}82'31''$	$76^{0}38'82''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल
6	बड़ला–I	खमाणों	$30^{0}75'87''$	$76^{0}32'69''$	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
7	बड़ला –II	खमाणों	$30^{0}75'90''$	$76^{0}33'21''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
8	बरवाली खुर्द	खमाणों	$30^{0}78'95''$	$76^{0}27'29''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
9	बठान खुर्द	खमाणों	$30^{0}77'96''$	$76^{0}36'67''$	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
10	भांबरी	खमाणों	$30^{0}79'10''$	$76^{0}33'29''$	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
11	भामिआ	खमाणों	$30^{0}77'50''$	$76^{0}34'97''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
12	चंडिआला	खमाणों	$30^{0}86'04''$	$76^{0}32'09''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
13	फतेहगढ़ निवान	खमाणों	$30^{0}71'32''$	$76^{0}31'21''$	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

14	हवारा	खमाणों	30^{0}84′28′′	76^{0}39′38′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
15	खमाणों खुर्द	खमाणों	30^{0}82′96′′	76^{0}35′46′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
16	खेड़ी नौध सिंह	खमाणों	30^{0}73′55′′	76^{0}35′38′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
17	कोटला मसूद	खमाणों	30^{0}73′40′′	76^{0}37′78′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
18	महेशपुरा	खमाणों	30^{0}73′04′′	76^{0} 33′58′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
19	मंसूरपुर	खमाणों	30^{0}78′64′′	76^{0}39′02′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
20	मनेला	खमाणों	30^{0} 65′65′′	76^{0} 51′38′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
21	मोहन माजरा	खमाणों	30^{0} 66′ 75′′	76^{0} 51′12′′	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
22	पंजकोहा	खमाणों	30^{0}59′87′′	76^{0}47′99′′	ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
23	रायपुर माजरी	खमाणों	30^{0}56′95′′	76^{0}57′37′′	प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
24	संघोल	खमाणों	30^{0}63′38′′	76^{0}50′28′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल
25	शुहावी	खमाणों	30^{0}64′46′′	76^{0}54′07′′	उत्तर हड़प्पन संस्कृति, ऐतिहासिक काल,प्रारंभिक मध्ययुगीन काल

बस्ती प्रारूप व सांस्कृतिक अनुक्रम :–

बस्ती मानव का वह निवास स्थान होता है जहाँ पर मानव की सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं। बस्ती प्रारूप या बस्तियों की बनावट में मानवीय बौद्ध तकनीक व पर्यावरण महत्त्वपूर्ण कारक होते हैं। बस्ती प्रारूप का अध्ययन पुरातत्व में पुरातत्ववेदा, नृविज्ञानी तथा मानव–विज्ञानी आदि ने किया है। उपरोक्त सभी विद्वान बस्ती प्रारूप के अध्ययन के लिए अपने–अपने सुझाव देते हैं। बस्ती प्रारूप के अध्ययन की शुरूआत एल. एच.मॉर्गन के कार्य के साथ हुई। जिन्होंने 1881 ई0 में उत्तरी अमेरिका के आदिकालीन मानव की बस्तियों का अध्ययन करते हुए यह समझने का प्रयास किया कि किस प्रकार आदिमानव की प्रागैतिहासिक काल में बस्तियाँ उनके सामाजिक संगठन को प्रतिबिंबित करती हैं। इसी प्रकार जूलियन ए.स्टीवर्ट, जी.आर.विली, ई. जेड.बोग्ट आदि ने बस्ती प्रारूप के महत्त्व पर बल दिया तथा बस्ती प्रारूप के लिए परिस्थितिकी उपागम व समाजशास्त्रीय उपागम का सिद्धांत दिया। इस तरह से हम देखते हैं कि बस्ती प्रारूप के अध्ययन को अधिकांश विद्वान परिस्थितिकी के साथ बस्तियों को जोड़कर विश्लेषण करते हैं।

बस्ती प्रारूप के संबंध में भारतीय विद्वानों ने भी अध्ययन किया है जिनमें एम.के. धवलीकर, जी.एल. पासेल, वी. शिंदे, आर.सी. ठाकरान[10], मक्खन लाल तथा जी. इरदोसी आदि प्रमुख हैं। खमाणों तहसील में पुरातत्व सर्वेक्षण, उत्खनन, प्रकाशित लेखों एवं पुस्तकों से प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर कुल 25 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं। जिनका सांस्कृतिक विवरण इस प्रकार है :–उत्तर हड़प्पन सभ्यता के 18, चित्रित धूसर मृदभाण्ड क्षेत्र के 08, ऐतिहासिक काल के 13, प्रारंभिक मध्यकाल के 23 हैं।

उत्तर हड़प्पन संस्कृति :–

अध्ययन क्षेत्र में मानव जीवन के प्रारम्भ को दर्शाने के लिए अनेक पुरास्थलों से विभिन्न प्रकार के पुराअवशेष प्राप्त होते हैं। जिसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में मानव की सांस्कृतिक गतिविधियाँ हड़प्पन के आरंभिक काल से प्रारम्भ हुई। इस काल के अधिकतर मृदभाण्ड़ों पर लाल पॉलिश

मिलती है, जिस पर पक्के कोल रंग से अलंकरण है। इस काल में मृदभाण्ड प्रायः चाक पर बने होते थे। खमाणों तहसील के क्षेत्र चंडीयाला, बरवाली खुर्द, अमराला, महेशपुरा आदि स्थानों से सर्वेक्षण में हड़प्पन संस्कृति से संबंधित पुरातात्विक सामग्री प्राप्त होती है। तथा संघोल के उत्खनन से हड़प्पन सभ्यता के बारे में विस्तार से जानकारी मिलती है।[11]

धूसर मृदभाण्ड व चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति :—

अध्ययन क्षेत्र में मानव की बस्तियों के सांस्कृतिक क्रम में अगला चरण धूसर मृदभाण्ड, चित्रित धूसर मृदभाण्ड तथा इसके समवर्ती मृदभाण्ड मिलते हैं। इन मृदभाण्डो में मुख्य रूप से कटोरे, तश्तरी आदि मिलते हैं। चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति काल में मृदभाण्ड प्रायः चाक पर बने होते थे। खमाणों तहसील के क्षेत्र बावर, खेड़ी नरसिंगपुर तथा हवारा आदि स्थानों से सर्वेक्षण में चित्रित धूसर मृदभाण्ड तथा इसके समवर्ती मृदभाण्ड मिलते हैं।[12]

ऐतिहासिक काल :—

खमाणों तहसील में मानव की बस्तियों के विकास का अगला सांस्कृतिक क्रम प्रारंभिक ऐतिहासिक संस्कृति का काल देखने को मिलता है। इस काल को मृदभाण्डों के आधार पर लाल स्लीप वाले मृदभाण्ड संस्कृति के नाम से भी जाना जाता हैं इस काल में अधिकांश लाल रंग के मृदभाण्ड विद्यमान थे। बर्तन अधिकतर चाक पर बनाए जाते थे। मृदभाण्डों के बाहरी पृष्ठभाग पर अनेक प्रकार की कलाकृतियों के डिजाईन किए जाते थे। खमाणों तहसील के बरवाली खुर्द , भामिया, हवारा, संघोल व सोहावी आदि पुरास्थलों से उपरोक्त प्रकार के मुदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।[13]

प्रारंभिक मध्यकाल :—

खमाणों तहसील में मानव की बस्तियों के विकास का अगला सांस्कृतिक क्रम प्रारंभिक मध्यकाल संस्कृति का देखने को मिलता है। यह काल गुप्तकाल से लेकर पूर्व—सल्तनत काल तक की

अवधि को माना जाता है। प्रारंभिक मध्यकाल और उसके बाद मध्यकाल के दौरान विभिन्न योद्धा कबीले समूह जैसे राजपूत और मुस्लिम शासक (सल्तनत व मुगलकाल) उत्तरी भारत के साथ–साथ पंजाब मे भी राजनैतिक रूप से महत्त्वपूर्ण थे। वर्तमान अन्वेषणों में अध्ययन क्षेत्र से प्रारंभिक मध्यकाल के मिट्टी के बर्तन बड़ी संख्या में पुरास्थलों से मिलते हैं। गुप्तकाल के बाद लाल रंग के मृदभाण्ड, हमें सजावट में गिरावट के संकेत देते है। इस अवधि मे मृदभाण्ड चाक पर बनाऐ जाते थे। मृदभाण्डों पर मुख्य चित्रित डिजाइन, ज्योमितिय और रैखिक हैं। खमाणों तहसील के अजनेर मांटों, अमराला, बडला, हवारा, खमाणों खुर्द, महेशपूरा आदि अनेक पूरास्थलों से उपरोक्त प्रकार के मृदभाण्ड मिलते हैं।

सारांश :–

अध्ययन क्षेत्र की समृद्ध पुरातात्विक क्षमता को कई पुरातात्विक सर्वेक्षणों द्वारा प्रकाश में लाया गया तथा उन स्थलों का दस्तावेजीकरण किया है, जिससे ऐसतिहासिक से मध्यकालीन काल तक के बसे हुए मानव बस्ती को समझने में आसानी हुई। आमतौर पर पुरातत्वों को केवल खुदाई या खोज के लिए माना जाता था परन्तु वर्तमान में यह मानव बस्ती के प्रारूप व सांस्कृतिक कालक्रम की जानकारी प्रदान करने का कुशल उपकरण बन गया है। पंजाब में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में जलवायु परिस्थितयाँ, उपजाऊ खेती योग्य भूमि और पानी की आपूर्ति इस क्षेत्र की प्रमुख संस्कृतियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कृषि आधार बन गया। जनसंख्या के निरंतर दबाव और कृषि गतिविधियों की तीव्रता ने देश के सभी प्रकार के पुरातात्विक स्थलों के व्यापक विनाश की अथक प्रक्रिया की भावना पैदा की है। यह सर्वेक्षण क्षेत्र में तत्कालीन संस्कृतियों की उत्पत्ति, विकास और विस्तार से जुड़ी कई समस्याओं को दोहराएगा और साथ ही साथ भौगोलिक व सांस्कृतिक लक्षणों के विस्तार, फैलाव और प्रसार के तंत्र को समझने में मदद करेगा। वर्तमान में खमाणों क्षेत्र के अधिकांश पुरास्थल हरित क्रांति के ख़तरे में आ गए हैं और पुरास्थलों से अवशेष प्राप्त करना एक बड़ी समस्या हो गई है। अतः ईमानदारी से उम्मीद की जाती है कि इस क्षेत्र से उत्खनन के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यम से ही निश्चित रूप से उन अनुत्तरित प्रश्नों को हल करने में मदद मिलेगी व सांस्कृतिक निरंतरता की दिशा में एक सकारात्मक योगदान होगा।

पाद टिप्पणियाँ :

1 आरेल स्टीन, 'ए सर्वे ऑफ एन्शियंट साइट्स अलोन्ग द लॉस्ट रिवर सरस्वती', *ज्यॉग्राफिकल जर्नल* वो. 99, 1942, पृ. 173–182

2 नारंग, के॰एस॰ (1969) *हिस्ट्री ऑफ पंजाब,* यू॰सी॰ कपूर एंड संस, दिल्ली, पृ॰ 1–3

3 *सेंसस ऑफ इण्डिया (2011), सीरीज–4, पार्ट–12,* डिस्ट्रिक्ट, सेंसस हैंडबुक फतेहगढ़ साहिब, पृ॰ 14–15

4 *पंजाब स्टेट गजेटियर (2000),* एडिटिड बाई जगमोहन सिंह हंस, पृ॰18–30

5 प्रशांत कुमार, प्रवीन के॰ ठाकुर एंड अदर्स (2016), असेसमेंट ऑफ दी इफैक्टिवनेस ऑफ ड्रास्टिक इन प्रिडक्टिंग द वुल्लरबिलिटी ऑफ ग्राउण्ड वाटर टू कांटमिनेशन : ए केस स्टडी फ्राम फतेहगढ़ साहिब डिस्ट्रिक्ट इन पंजाब, *इण्डिया एन्वायरमेंटल अर्थ साईंसिज,* आईएसएसएन 186–6280, वॉल्यूम 75(10) पृ॰ 3–4

6 मधु बाला, *इण्डियन एन्थ्रोपोलोजिस्ट,* (1978), वॉल्यूम 8(2), ए सर्वे ऑफ द प्रोटो–हिस्टोरिक इन्वेस्टिगेशन इन पंजाब एंड दी अमर्जेंट पिक्चर, पृ॰101–103

7 हिमांशू प्रभा रॉय, (एडि.) *संघोल एण्ड दा आर्कोलोजी ऑफ पंजाब,* (2010), पृ.28–45

8 मधूबाला, *आर्कोलोजी ऑफ पंजाब,* (1997),पृ.–36–38

9 हिमांशू प्रभा रॉय, (एडि.) *संघोल एण्ड दा आर्कोलोजी ऑफ पंजाब,* (2010), पृ.28–45

10 आर.सी. ठाकरान 'इम्पलिकेशन ऑफ पार्टिशन ऑफ प्रोटोहिस्टोरिक इन्वेस्टिगेशन इन द घग्घर–गंगा बेसिन', *सोशल साइंटिस्ट,* वो. 28, जनवरी–फरवरी, 2000, पृ. 42–67

11 *आई.ए.आर,* 1994–95, पृ.63–65

12 *आई.ए.आर,* 1976–77, पृ.41–45

13 *आई.ए.आर,* 1977–78, पृ.43–45